13 सितम्बर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ की 53वीं तथा राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ की 8वीं पुण्यतिथि पर साप्ताहिक समारोह के अन्तर्गत चल रहे सप्त दिवसीय श्री राम कथा का तात्विक विवेचन के समापन के अवसर पर गोरक्षपीठाधीश्वर उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री परम पूज्य योगी आदित्यनाथ महाराज जी ने कहा कि

गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम हर परिस्थिति में सत्य के प्रति आग्रह रखने वाले सनातन धर्म की अटूट आस्था हैं। उनका जीवन हम सबको नकारात्मकता से दूर रहकर सत्य की राह पर चलते हुए विषम से विषम परिस्थितियों में संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। उनके जीवन दर्शन के माध्यम से समूचे समाज का मार्गदर्शन करने वाली श्रीराम कथा का श्रवण बहुत ही सौभाग्य की बात है।

उन्होंने कहा कि सनातन धर्म परंपरा में श्रीराम के बगैर आस्थावान जनता का काम हो ही नहीं सकता। आस्था सामूहिक हो तो उसका विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है। भगवान श्रीराम की कथा का हर एक प्रसंग सभी आस्थावानों को याद है। फिर भी हम सभी इस कथा के साथ अत्यंत सहृदयता से जुड़कर उसमे वर्णित हर घटना अपने इर्द गिर्द महसूस करते हैं और अंततः सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

गोरक्षपीठाधीश्वर ने श्रीराम कथा से सकारात्मकता की सीख लेने का आह्वान करते हुए कहा कि नकारात्मक सोच का परिणाम कभी सकारात्मक नहीं हो सकता। हम सभी को अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सदैव आस्था के साथ सकारात्मक भाव रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज पूरा देश आस्था एवं सकारात्मक भावना के साथ प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण से जुड़ा हुआ है यह पूरी दुनिया के लिए कौतूहल का विषय है। श्रीराम का जन्म कब हुआ, इतिहासकार इसकी गणना करने में सफल ही नहीं हो पा रहे थे। यही नहीं इसमें मिथक भी जोड़ने का प्रयास किया

गया। पर, अंततः सत्य की जीत हुई। सत्य का आग्रह और सत्य के मार्ग पर चलना ही भारत की आस्था है और सनातन धर्म की परंपरा एवं विशेषता भी। इसी परंपरा के अनुरूप राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन में पहली शर्त रखी थी, सत्याग्रह। सीएम योगी ने सभी लोगों के लिए श्रीराम कथा के फलदायी एवं मंगलमयदायी होने की कामना की।

कथा व्यास अशर्फी भवन अयोध्या के पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री श्रीधराचार्य जी महाराज ने व्यास मञ्च से आज श्री राम जी द्वारा माता शबरी को नवधा भक्ति का ज्ञान, हनुमान व श्री राम जी का मिलना तथा सुग्रीव से मिलना, बाली वध एवं हनुमान जी द्वारा सीता जी की खोजना, राम जी द्वारा लंका पर आक्रमण एवं रावण के वध की कथा सुनाई।

कथा व्यास ने कहा कि राम और श्री कृष्ण का काया अवतार वैभव अवतार कहा गया है। श्री राम अपने दैवीय गुणों का आचरण व्यवहार करके बताते हैं, एक मनुष्य के रूप में श्री राम ग्यारह वर्ष तक राज करते हैं यह उनका मर्यादा रूप है इसलिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम भगवान राक्षसों के वध के लिए अवतरित नहीं होते हैं अपितु वह मानवीय गुणों की स्थापना के लिए अवतार लेते हैं। समस्त राक्षसों का वध करना है तो वैसे ही बैठे-बैठे वध कर देंगे परन्तु मानव के रूप में आकर मानव शिक्षा देने का काम करते हैं।

भगवान राम शबरी जी से मिलते हैं शबरी को नवधा भक्ति की शिक्षा देते हैं। कथा व्यास ने नवधा भक्ति का वर्णन करते हुए कहा कि पहली भक्ति संतों की संगति है,

दूसरी भक्ति प्रभु की कथा सुनना, तीसरी भक्ति गुरु के चरणों की सेवा करना, चौथी भक्ति कपट तज कर प्रभु का गुणगान करना, पांचवी भक्ति वेद से प्रकाशित भजनों को कहना , छठवीं भक्ति शील युक्त होकर सज्जन धर्म का पालन करना , सातवां भक्ति सभी में प्रभु का दर्शन करना , आठवीं भक्ति जो भी मिले उसी में संतोष करना और नवीं भक्ति सबको समान रूप से देखना है।

कथा व्यास ने कहा कि भगवत निमित्त प्रेम पूर्वक, समर्पण पूर्वक जो भी कार्य किए जाएं उसे भक्ति कहा जाता है। भक्ति की सीमा अत्यन्त विशाल है।

भक्ति के तीन रूप बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रभु का दर्शन पाने के लिए जो प्रेम होता है उसे भक्ति कहते हैं, प्रभु के दर्शन होने बाद जो भक्ति होती है उसे पराभक्ति करते हैं और दर्शन के बाद भी अधिक अनुराग का जो अनुभव होता है और एकान्त में बैठने पर भी जो प्रभुत्व भाव रहता है तो उसे परमा भक्ति कहते हैं। सत्संगति का सबसे बड़ा फल यही होता है कि हमारे अन्दर नवधा भक्ति का आविर्भाव हो जाता है।

उन्होंने कहा कि सेवा के बाद जब अभिमान न आवे तो उसे ही सच्चा भक्त कहते हैं बिना सतगुरु के, सत्संग के बिना प्रभु को पाना असंभव है, महापुरुषों के चरणरज पाकर ही कोई मानव महामानव बन सकता है और प्रभु की शरण में जाने का मार्ग सच्चा गुरु ही दिखा सकता है।

उन्होंने कहा कि भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की सेना मे जो भी बन्दर भालू थे सभी देवताओं के अंश थे। दूत हनुमान जैसा और मंत्री सुग्रीव जैसा होना चाहिए।

जीव का स्वभाव होता है कि जब भगवान का दर्शन पाता है तो सबसे पहले वह अपने दु:ख को ही प्रकट करता है।

उन्होंने कहा कि तीन कारणों से मैत्री खण्डित हो जाती है धन के लोभ से, परस्पर विवाद से एवं परोक्ष में वैरीभाव रखने से। जो व्यक्ति किए गए उपकार को भुला दे उसे कृतघ्न कहते हैं। ब्रह्म हत्या का प्रायश्चित है किंतु कृतघ्नी का कोई प्रायश्चित नहीं होता है।

भगवान राम बाली का बध इस लिए करते हैं कि बाली की पत्नी तारा को भगवान के दिव्य गुणों का ज्ञान था बाली भगवान की शरणागत हो जाते। रावण भी शरणागत तो जाता तो आसुरी शक्तियों का संहार नहीं हो पाता।

उन्होंने कहा कि हम भारतियों की आदत है कि हम अपनी शक्तियों को भूल जाते हैं, यदि हम सभी अपने शक्तियों को भगवान हनुमान की तरह जागृत कर ले तो यह भारत आज विश्वगुरु बन जाए।

कथा व्यास ने कहा ज्ञान का आधार मन होता है। मन एक है और इन्द्रियां दस है, जिस इन्द्रिय से मन जुड़ता है उसी का ज्ञान आत्मा को होता है। भले ही आप किसी परिस्थिति वस वर्जित स्थान पर चले जाएं पर मन में यदि विकार न आवे तो प्रायश्चित की आवश्यकता नहीं है।

कथा व्यास ने "मेरे तो आधार सीताराम के चरणारविंद ", "राम सिया राम सिया राम जय जय राम"," गोविंद राघव माधवा "इत्यादि भजन गाकर भगवान के भक्ति का वर्णन किया।